वृत्तपत्राचे नांव :– नवभारत टाईम्स्
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– मुंबई
वृत्तपत्र पान क :– 6
दिनांक :–24/12/2004

वेद ही धर्म का आधार हैं

आचार्य मुसद्दीलाल विष्णु

हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों को धर्म का आधार बनाया था। उनके अनुसार वेदों के अर्थ विस्तार की कोई सीमा नहीं है– अनन्तो वै वेदा:। इसका आशय यह हुआ कि ऋचाओं के रूप में वेदों में ज्ञान के मूल सूत्र दिए गए हैं। इसीलिए उनका अनंत अर्थ विस्तार किया जा सकता है और मनुष्य किसी भी काल में अपने ज्ञान का विस्तार किसी भी दिशा या क्षेत्र में करेगा, उसका आधार वे ऋचाएं ही होंगी। इसीलिए वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक कहा गया है।

भारत के पारंपरिक चिंतन में वेद को अपौरुषेय माना गया है। जिस प्रकार पिता अपनी संतान को जीवन के गूढ़ रहस्य समझाकर उसे इस योग्य बनाता है कि वह पुत्र समाज में सुसंस्कृत एवं सफल जीवन जी सके, उसी प्रकार वेद भी हमें जीवन और जगत के गूढ़तम रहस्यों का ज्ञान देते हैं। वेद संख्या में चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनके विषय भी चार ही हैं– ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान। यूं तो प्रत्येक वेद में इन चारों विषयों से संबंधित मंत्र हैं, परंतु प्रधानता की दृष्टि से ऋग्वेद में ज्ञान, यजुर्वेद में कर्म, सामवेद में उपासना और अथर्ववेद में विज्ञान से संबंधित मंत्रों की संख्या अधिक है। सभी वेद मंत्र एक विशेष स्वर योजना में आबंधित होते हैं, जिन्हें छंद कहते हैं। इन मंत्रों का प्रत्येक शब्द कुछ विशेष प्रकार की ऊर्जा तरंगें या उष्मा उत्पन्न करता है, जिससे उसका विशेष प्रभाव निर्धारित होता है। इन्हें खड़े या पड़े स्वर चिह्नों से प्रदर्शित किया जाता है। वेद के मंत्रों का अर्थ भी उन्हीं में छुपा हुआ है। जैसे स्वयं 'वेद' शब्द या नाम का अर्थ इस वेद शब्द में ही छुपा हुआ है। वेद शब्द संस्कृत के 'विद्' धातु से बना है। 'विद्' धातु के चार अर्थ हैं– विद् ज्ञाने अर्थात जानना, विद् विचारणे अर्थात विचार करना, सोचना, विद् सत्तायाम अर्थात अनुसरण करना, आज्ञा का पालन करना। विद् लाभे अर्थात लाभान्वित होना या लाभ प्राप्त करना। 'वेद' शब्द में इन चारों अर्थों का समन्वय है। इसे यूं समझें कि 'वेद' शब्द' में ही यह अर्थ निहित है कि पहले वेदमंत्र का अर्थ भली प्रकार जान लें, फिर उस पर अच्छी तरह विचार कर लें, फिर उस मंत्र में दी हुई शिक्षा को पूरी तरह से अपने जीवन में उतार लें, तो आपको स्वत: उसका लाभ प्राप्त हो जाएगा। उदाहरण के लिए यजुर्वेद का एक मंत्र है: ओं विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥ इस मंत्र का अर्थ है– हे (देव) उत्तम गुण कर्म स्वभावयुक्त (सवित:) तथा उत्तम गुण कर्म स्वभावों में प्रेरणा देने वाले परमेश्वर! आप हमारे (विश्वानि) संपूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को (परासुव) दूर कर दीजिए, और (यत्) जो (भद्रम) कल्याणकारी गुण, स्वभाव, कर्म और पदार्थ हैं (तत्) वे सब हमको (आसुव) प्राप्त कराइए।

कल्पतरु

जब हम इसके अर्थ पर विचार करते हैं, तो पता चलता है कि हमारे दुर्गुण (बुराइयां) व दुर्व्यसन (बुरी आदतें) ही हमारे दु:खों का कारण हैं। जब हम कल्याणकारी गुणों को धारण करेंगे और अपने स्वभाव को विनम्र बनाकर अच्छे कर्म करेंगे तो ही हमें सुख के साधन (पदार्थ) अपने आप उपलब्ध होंगे। इस प्रकार ऊपर दिए गए श्लोक के अर्थ को जानकर हम अपनी सभी बुराइयों की सूची बनाएंगे। इनसे कैसे छुटकारा पाना है, इसकी योजना बनाकर उसे कार्यान्वित करना प्रारंभ कर देंगे। हम अपनी इन बुराइयों और बुरी आदतों को स्वयं द्वारा निर्धारित समय सीमा में अवश्य दूर कर लेंगे। तत्पश्चात हम उन अच्छे गुणों की एक सूची बनाएंगे जो हममें नहीं हैं। फिर योजनाबद्ध तरीके से उन शुभ गुणों को ग्रहण करते जाएंगे और सुकर्म करते रहेंगे।

जब हम अपने दुर्गुणों और व्यसनों से छुटकारा पा लेंगे तो निश्चित रूप में हमारे दुख दूर हो जाएंगे। इसी प्रकार, जब हममें अच्छे गुण होंगे, हमारा स्वभाव विनम्र होगा और हमारे कर्म शुभ होंगे तो निश्चित रूप से हमें कल्याणकारी पदार्थों की उपलब्धि होगी और हमारा जीवन भी सुखमय हो जाएगा।

वेद मंत्रों का यही आशय है कि पहले आप उसके अर्थ को जानिए, फिर उस अर्थ पर विचार कीजिए, फिर उसे जीवन में उतारिए। इससे जीवन अपने आप सुखपूर्ण हो जाएगा और बस लाभ स्वत: ही हो जाएगा। यही वेद के अमृत का पीना है अर्थात सफलता ही सफलता, लाभ ही लाभ और सुख ही सुख।